आर्यन खान ने हाल ही में अपने निर्देशन की शुरुआत नेटफ्लिक्स वेब सीरीज 'द बा**इस ऑफ बॉलीवुड' से की है, जिसने दर्शकों और आलोचकों दोनों का ध्यान खींचा है। यह शो बॉलीवुड के ग्लैमरस और अराजक अंदरूनी कामकाज की एक व्यंग्यात्मक झलक पेश करता है और इसे अपनी चुटीले हास्य, चतुराई भरे संवादों और बॉलीवुड के प्रति श्रद्धा के लिए सराहा गया है।

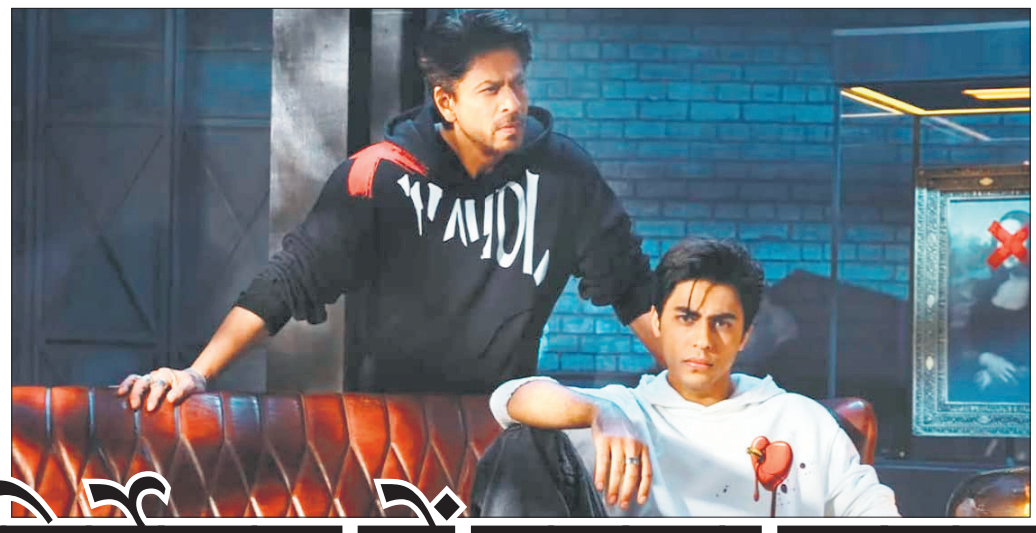

आर्यन खान का निर्देशन में पहला कदम

'द बैड्स ऑफ बॉलीवुड'

निर्देशकीय दृष्टि और कथा शैली

इस सात-एपिसोड की सीरीज में आर्यन खान ने एक महत्वाकांक्षी बाहरी व्यक्ति आसमान सिंह की कहानी पेश की है, जो बॉलीवुड की चकाचौंध से भरी दुनिया में अपनी पहचान बनाने की कोशिश करता है। कहानी सत्ता, पैसे और इंडस्ट्री के 'माफिया' के बीच घूमती है, जिसमें कई बॉलीवुड संदर्भ और स्टार-जड़ीदार कैमियो शामिल हैं, जिनमें सलमान खान, शाहरुख खान, आमिर खान और रणबीर कपूर जैसे बड़े नाम भी शामिल हैं। आर्यन की कहानी कहने की शैली को स्टाइलिश और तेज-तर्रार बताया गया है, जो आज के दर्शकों को पसंद आती है।

शाहरुख खान के प्रति गर्वानुभूति

इस सीरीज में आर्यन ने अपने पिता शाहरुख खान के करियर के प्रति गर्व प्रकट किया है। कई मौकों पर, शो में शाहरुख के करियर के संदर्भ और यादगार पल दिखाए गए हैं, जिसने उनके प्रशंसकों को भावुक और पुरानी यादों में खो जाने का एहसास कराया। एक दृश्य में आसमान को बेस्ट एक्टर का अवॉर्ड मिलता है और वह शाहरुख की फिल्म 'ओम शांति ओम' के प्रतिष्ठित संवाद, 'अगर किसी चीज को दिल से चाहो...' को दोहराता है, जिसने सोशल मीडिया पर धूम मचा दी थी। शाहरुख का खुद शो में एक कैमियो करना उनके प्रशंसकों के लिए एक भावनात्मक क्षण था, जो दिल्ली से मुंबई तक के उनके सफर को दर्शाता है।

निर्देशन और लेखन

एक अभिनेता के रूप में डेब्यू करने के बजाय, आर्यन ने निर्देशन को चुना, क्योंकि उन्हें इसमें रचनात्मक नियंत्रण मिला। उन्होंने अपनी इस पहली सीरीज को सह-लिखा और सह-निर्देशित किया, जिससे उनकी कहानी कहने की क्षमता सामने आई। आर्यन ने बताया कि बचपन से ही उनके पिता ने उन्हें फिल्म निर्माण के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराया, जो उनके लिए यूनिवर्सिटी जैसा था। उन्होंने लॉकडाउन के दौरान अपने पिता और बहन सुहाना के साथ मिलकर एक शॉर्ट फिल्म भी बनाई थी।

विवाद और प्रतिक्रिया

सीरीज के कुछ दृश्यों पर विवाद भी हुआ है। एनसीबी अधिकारी समीर वानखेड़े ने मानहानि का मुकदमा दायर करते हुए आरोप लगाया है कि एक किरदार में उनका मजाक उड़ाया गया है। हालांकि आर्यन ने अपने शो का बचाव करते हुए कहा कि वह 'आत्म-व्यंग्यात्मक' होना चाहते थे, न कि 'अनादरपूर्ण'। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि कुछ चुटकुले सभी के लिए नहीं हो सकते हैं, लेकिन युवाओं को यह पसंद आ सकता है।

सफल उद्यमी

निर्देशन के अलावा, आर्यन खान एक सफल उद्यमी भी हैं। 2022 में उन्होंने 'स्लैब वेंचर्स' नामक कंपनी की सह-स्थापना की, जिसके तहत उन्होंने 'डी' यावोल' नामक एक लक्जरी कलेक्टिव ब्रांड लॉन्च किया। हाल ही में उन्होंने और उनके पिता ने निखिल कॉमथ और रेडिको खेतान के साथ मिलकर एक प्रीमियम शराब ब्रांड, 'डी'यावोल स्पिरिट्स' भी लॉन्च किया।

'द बा**ड्स ऑफ बॉलीवुड' आर्यन खान के लिए एक मजबूत और प्रभावशाली शुरुआत है, जिसने साबित कर दिया है कि वह कैमरे के पीछे भी उतने ही प्रतिभाशाली हैं, जितने कि कैमरे के सामने। यह शो न केवल मनोरंजन करता है, बल्कि बॉलीवुड की चकाचौंध के पीछे की कुछ सच्चाइयों को भी उजागर करता है। अपनी पहली ही फिल्म में आर्यन ने एक निडर और रचनात्मक निर्देशक के रूप में अपनी पहचान बनाई है और उनका भविष्य काफी उज्ज्वल नजर आता है।

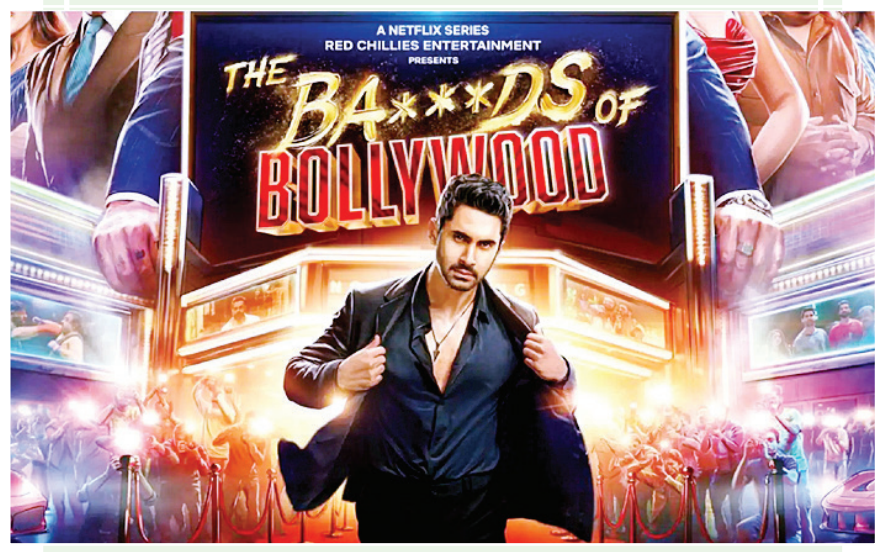

'द गॉडफादर' बनने की दिलचस्प कहानी

लेखक मारियो पूजो ने एक उपन्यास लिखा 'द गॉड फादर'। यह उपन्यास आज भी बहुत चर्चित है। इस उपन्यास पर फिल्म बनाना बहुत मुश्किल काम था, लेकिन पैरामाउंट पिक्चर ने यह जोखिम उठाया। इस उपन्यास की कहानी 1945 से 1955 के बीच न्यूयार्क के एक माफिया डॉन परिवार पर बेस्ड है। वीटो कोरलियॉन (मार्लन ब्रांडो) इस परिवार के मुखिया हैं। उन्हें ही डर से लोग 'गॉड फादर' के नाम से पुकारते हैं। इस फिल्म को अमेरिकन फिल्म इंस्टीट्यूट ने 'वन ऑफ द बेस्ट अमेरिकन फिल्म्स एवर मेड' कहा है। इस फिल्म का निर्देशन फ्रांसिस फोर्ड कोपोला ने किया है। इस फिल्म को बनाने की कहानी बड़ी ही दिलचस्प है।

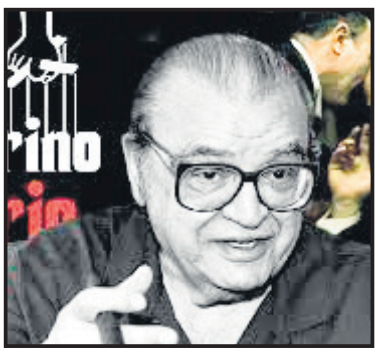

'द गॉडफादर' फिल्म का निर्माण एक असाधारण और चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया थी, जो 1972 में रिलीज हुई थी। यह हॉलीवुड इतिहास की सबसे प्रशंसित और प्रभावशाली फिल्मों में से एक है। इसकी यात्रा कई बाधाओं, स्टूडियो के दखल और कलाकारों के चयन की समस्याओं से भरी हुई थी। फिल्म की कहानी मारियो पूजो के 1969 में प्रकाशित उपन्यास 'द गॉडफादर' पर आधारित है। पूजो ने यह किताब पैसा कमाने के उद्देश्य से लिखी थी, क्योंकि उनकी पिछली किताबें बहुत लोकप्रिय नहीं हुई थीं। यह उपन्यास तेजी से बेस्टसेलर बन गया। पैरामाउंट पिक्चर्स ने 1967 में ही इस उपन्यास के अधिकार खरीद लिए थे, जब यह एक अधूरा मसौदा था।

निर्देशक का चयन

पैरामाउंट के कार्यकारी रॉबर्ट इवांस चाहते थे कि एक इटालियन अमेरिकी ही फिल्म का निर्देशन करें, ताकि यह प्रामाणिक लगे। उनकी पसंद फ्रांसिस फोर्ड कोपोला थे, जो उस समय एक युवा और संघर्षरत निर्देशक थे। कोपोला ने शुरुआत में उपन्यास को पसंद नहीं किया था। उन्हें लगा कि इसमें केवल सनसनीखेज तत्वों पर ध्यान दिया गया है, लेकिन बाद में उन्होंने इसे एक पारिवारिक गाथा के रूप में देखा और इसमें छिपी हुई शास्त्रीय त्रासदी को पहचाना।

स्टूडियो की अड़चनें

कोपोला को पूरी शूटिंग के दौरान पैरामाउंट स्टूडियो के लगातार विरोध का सामना करना पड़ा। स्टूडियो उनके निर्णयों से नाराज था और कई बार उन्हें फिल्म से निकालने की धमकी दी। स्टूडियो फिल्म को आधुनिक समय (1970 के दशक) में सेट करना चाहता था, ताकि लागत कम हो, लेकिन कोपोला 1940 के दशक के समय पर अड़े रहे, जिससे फिल्म की भव्यता और लागत दोनों बढ़ गईं।

कलाकारों का चयन

कोपोला के कलाकारों के चयन पर भी स्टूडियो को सख्त आपत्ति थी। मार्लन ब्रैंडो का नाम सुनते ही स्टूडियो के अधिकारी भड़क गए, क्योंकि उनका करियर ठीक नहीं चल रहा था और वे अक्सर सेट पर समस्याएं पैदा करते थे। कोपोला ने उन्हें कास्ट करने के लिए जिद्द की, यहां तक कि एक स्क्रीन टेस्ट करवाने के लिए भी तैयार हो गए। अल पचीनो उस समय एक नए कलाकार थे, जबकि स्टूडियो एक स्थापित नाम चाहता था। कोपोला को उनकी काबिलियत पर पूरा भरोसा था और उन्होंने उन्हें कास्ट करने के लिए स्टूडियो से लड़ाई की।

माफिया का दबाव

जोसेफ कोलंबो के नेतृत्व वाले इटालियन-अमेरिकन सिविल राइट्स लीग ने फिल्म का विरोध किया, क्योंकि उन्हें लगा कि यह इटालियन-अमेरिकियों के बारे में रूढ़िवादिता को बढ़ावा देगी। उन्होंने पटकथा से 'माफिया' और 'कोसा नोस्ट्रा' जैसे शब्द हटाने की मांग की। फिल्म की लंबाई एक और बड़ी समस्या थी। कोपोला ने 90 घंटे से ज्यादा का फुटेज शूट किया था, जिसे स्टूडियो की मांग के अनुसार छोटा करना एक थका देने वाला काम था। फिल्म के संपादन के लिए कई एडिटरों को काम पर रखा गया।

सदी की महानतम फिल्म

सभी चुनौतियों के बावजूद, कोपोला ने फिल्म को शानदार ढंग से पूरा किया। 'द गॉडफादर' ने समीक्षकों की प्रशंसा और बॉक्स ऑफिस पर जबरदस्त सफलता हासिल की। इसने कई ऑस्कर जीते और इसे हमेशा के लिए सिनेमा की एक महानतम कृति माना जाता है। द गॉडफादर की कहानी न केवल कोरलियोन परिवार के बारे में है, बल्कि एक निर्देशक के अपने दृष्टिकोण पर टिके रहने और हॉलीवुड के दबाव का सामना करने के बारे में भी है।

मॉडल आफ द वीक

नाम: प्रभाती पांडेय

टाउन: लखनऊ

एजुकेशन: लारेटो कालेज में 11 वीं छात्रा

अचीवमेंट: मिस यूपी-2023

ड्रीम: मिस यूनिवर्स

ज़िंदगी का सफर

शर्मीली शर्मिला

जिन्होंने भी कश्मीर की कली देखी है, उन्हें मालूम होगा कि फिल्म अभिनेत्री शर्मिला टैगोर में अभिनय की कितनी रेंज हैं। उसमें वह एक चुलबुली सी कश्मीरी लड़की के किरदार में नजर आई थीं। शम्मी कपूर के साथ उनकी यह जोड़ी बहुत सफल रही। शर्मिला टैगोर का जन्म आठ दिसंबर 1944 को हैदराबाद में हुआ था। उन्होंने हिंदी और बंगाली सिनेमा में छह दशकों तक काम किया। वह बंगाली टैगोर परिवार से संबंधित हैं। यह भी कहा जाता है कि उनकी रिश्तेदारी नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर से भी रही है। कहते हैं कि वह रवींद्र नाथ टैगोर की परपोती हैं।

उन्होंने 1964 में फिल्म 'कश्मीर की कली' से बॉलीवुड डेब्यू किया। 1967 में आई फिल्म 'एन इवनिंग इन पेरिस' में बिकिनी पहनने वाली वह पहली भारतीय अभिनेत्री थीं। उन्होंने उस समय की रूढ़ियों को तोड़ा था।

1969 में आई फिल्म 'आराधना' से उन्हें अपार सफलता मिली। यह फिल्म उस दौर की सबसे बड़ी हिट फिल्मों में से एक थी। राजेश खन्ना के साथ उनकी जोड़ी काफी सफल रही और उन्होंने कई हिट फिल्में दीं, जिनमें 'आराधना', 'अमर प्रेम', 'सफर' और 'दाग' शामिल हैं। 1975 में उन्होंने गुलजार की फिल्म मौसम में भी काम किया, जिसके लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिला। हाल ही में उन्होंने 2023 में फिल्म गुलमोहर के साथ ओटीटी पर वापसी की।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक शर्मिला टैगोर खुद रवींद्रनाथ टैगोर से रिश्तेदारी के बारे में बता चुकी हैं। उन्होंने कहा था कि उन्हें इसके बारे में ज्यादा कुछ पता नहीं है, लेकिन ये बेहतरीन सरनेम है और इस पर उनको गर्व है कि वो उस घर में पैदा हुई हैं। शर्मिला ने बताया था कि उनकी पैदाइश से तकरीबन तीन बरस पहले ही रवींद्रनाथ टैगोर का निधन हो चुका था। उन्होंने अपनी मम्मी से उनके बारे में ढेर सारी कहानियां जरूर सुनी थीं।

शर्मिला का जन्म एक बंगाली हिंदू परिवार में हुआ था। उनके पिता, गीतिंद्रनाथ टैगोर, ब्रिटिश इंडिया कॉर्पोरेशन के महाप्रबंधक थे और उनकी मां का नाम इरा टैगोर था। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा कोलकाता के सेंट जॉन डायोसेसन गर्ल्स हायर सेकेंडरी स्कूल से पूरी की। 13 साल की उम्र में, उन्होंने अपनी पढ़ाई छोड़ दी, क्योंकि उनका ध्यान पूरी तरह से अभिनय पर केंद्रित हो गया था। शर्मिला ने 1959 में सत्यजीत रे की बंगाली फिल्म 'अपुर संसार' से अपने अभिनय करियर की शुरुआत की।

शर्मिला टैगोर ने 1969 में मंसूर अली खान पटौदी से शादी की, जो उस समय भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान और पटौदी के नवाब थे। उनके तीन बच्चे हैं। अभिनेता सैफ अली खान, अभिनेत्री सोहा अली खान और आभूषण डिजाइनर सबा अली खान। शर्मिला को 2013 में पद्म भूषण पुरस्कार मिला। आराधना (1970) के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का फिल्मफेयर मिल चुका है। वह 2005 में यूनिसेफ इंडिया के सद्भावना दूत के रूप में भी नामित हुईं।